B.A. Part 3

Topic: - Raajnitik Sanskriti (Paper 7)

- राजनी तक स कृ त को प रभा षत करते ए उसके कार का वणन करे।

उ र - राजनी त व ◌ान के ◌े म राजनी तक संकृ त क अवधारणा ब कुल एक नई संक पना है। तीय व यु केबाद राजनी तक व ◌ेषक यह खोज करनेम लगेहै क समान राजनी तक संघा मक ढांचेवाली राजनी तक व था म अंतर य आ जाता हैतथा येक देश म राजनी तक व था य अलग अलग हो जाती है,उनका वकास य अलग अलग हो जाता है। ऐसी थ त म राजनी तक व ◌ेषक नेभारत, ◌ांस, अमे रका, टेन, पा क तान, म इ या द वक सत एवं वकासशील देश ने एक साथ मलकर राजनी तक व था एवंराजनी तक संकृ त का तुलना मक अ ययन करना शु कया। इन लोग ने न कष नकाला क राजनी तक संकृ त के कारण वकासशील देश का राजनी तक वकास राजनी तक व था केमाग म बाधा बन रहा हैजब क अ य रा जो वक सत हैवेराजनी तक संकृ त को राजनी तक व था के वकास केअनुकूल बना रही है। इस कार राजनी तक संकृ त क अवधारणा राजनी त व ◌ान क लोक य धारणा बन गई और यह धारणा राजनी तक संकृ त राजनी तक वकास के व भ पहलु पर अ ययन करना शु कया। लू सयान पाई ने लखा है--- त त समाज म एक सी मत और प राजनी तक संकृ त होती है,जो राजनी तक या को अथ, व प और आजाद दान करती है।कुछ समय बाद राजनी त व ◌ान केअनेक व ◌ान नेजैसे सडनी वमा, आमंड, पारस स नेराजनी तक संकृ त को राजनी त व ◌ान म तुलना मक अ ययन कर इसे और भी मह वपूण बना दया।

इस कार राजनी तक संकृ त क अवधारणा संकृ त एवं वचार पर आधा रत है। यहांसंकृ त सेमतलब कसी देश केलोग के वहार, मा यताएं, व ◌ास, घृणा, वामीभ , नै तकता , कला कौशल पर आधा रत राजनीत है। कुछ राजनी तक व ◌ान नेराजनी तक संकृ त को राजनी तक समाज केमूय , वचार एवंआदश का समूह बताया है। प मी देश म जहांलोकतं हैवहांराजनी तक संकृ त पर ब त यादा अ ययन कया गया है। कुछ व ◌ान नेकहा क राजनी तक संकृ त के अंदर एक उदार लोकतं वक सत और समे कत होनेक संभावना है। कुछ

राजनी तक व ान यह कहतेह क राजनी तक संकृ त एक सामू हकता क संप है, जैसेएक देश, े , वग या दल।

इस कार धीरे-धीरेराजनी तक संकृ त क अवधारणा राजनी तक व ान क लोक य धारणा बन गई और राजनी तक वकास का समाज वै नक पहलु पर आधा रत थी। इस अवधारणा को सबसेपहलेआमंड ने 1956 म यु कया था। सामा य तौर पर या बोलचाल क भाषा म राजनी तक संकृ त कसी रा य केअंदर रहनेवालेसभी लोग क उन सामू हक भावना का नाम है, ज ह राजनी तक व था क त या के प म कया जाता है। लू सयन पाई ने लखा है क राजनी तक संकृ त म अ भवृ हो, व ास हो, मनोभाव का समुचय है,जो राजनी तक या को अथ एवंसु व था दान करता है। वह राज व था के वहार को नयं त करनेवाली अंत न हत पूव धारणा तथा नयम क ा या करता है। आमंड एवंपावेल केअनुसार राजनी तक संकृ त राजनी तक णाली के सद य म राजनी त के त य के वहार तथा अ भमुखीकरण क प त है। पारस स का कहना है क राजनी तक संकृ त का संबंध राजनी तक उ ेय के त कया गया अनुकूलन है। गेटल केअनुसार राजनी तक संकृ त का अथ रा य सरकार सेसंबं धत ान मूयांकन और सं ारण के तमान या त मानव सेहै।

राजनी तक संकृ त के कार --

येक राजनी तक समाज केसद य क राजनी तक सहभाग गता राजनी तक संकृ त का नधारण करती है। जहांकह भी राजनी त म पर पर एवंआधु नकता के बीच संघष चलता रहता हैवहांपर राजनी तक संकृ त का नवीन प अ त व म आ जाता है, जसेहम म त संकृ त कहतेह । वैसेराजनी तक संकृ त राजनी त क म जातां क, सा यवाद , समाजवाद , राजतं ीय हो सकती है। अगर भौगो लक
आधार पर देखा जाए तो राजनी तक संकृ त पवतीय, मैदानी तथा अकाशीय े पर भी नभर करती है। वैसेअनेक व ान राजनी तक संकृ त के कार का वणन कया हैले कन म यहांफाइनर क पुतक म संकृ त केचार कार बताएंगए हैजो न न ल खत है--

प्रथम, प्रौढ़ राजनीतिक संस्कृति--

इस प्रकार की संस्कृति इंग्लैण्ड, ऑस्ट्रेलिया तथा नीदरलैण्ड में पाई जाती है। इस प्रकार की राजनीतिक संस्कृति में संघीय शक्तियों का प्रयोग नहीं के बराबर किया जाता है। इसमें राजनीति सर्वसम्मति उच्च कोटि की होती है एवं शासन में नागरिकों के अधिकारों का ही बोलबाला होता है। इस प्रकार की संस्कृति राजनीतिक स्थिरता वाली देशों में पाई जाती है।

द्वितीय, विकसित राजनीतिक संस्कृति-------

इस प्रकार की संस्कृति में, अल्जीरिया और क्यूबा जैसे देशों में पाई जाती है। इस प्रकार की राजनीति में सत्ता में क्रांति की संभावना बनी रहती है। इस प्रकार की राजनीतिक संस्कृति जन देशों में पाई जाती है, वहां जनता को शस्त्र आदि का भय दिखाकर दबाया जाता है।

तृतीय, निम्न राजनीतिक संस्कृति-------

इस प्रकार राजनीति उन देशों में पाई जाती है, जहां लोकमत मजबूत नहीं होता। इस प्रकार की राजनीति में विरोध की भावना का अभाव होता है। उन देशों में राजनीतिक संस्थाएं पाई जाती है। वह चाहती है कि जनता खुशहाल रहे, लेकिन ऐसा नहीं हो पाता। इस प्रकार की राजनीतिक संस्कृति में दम घुटने लगता है तथा जनता अपने अधिकारों से वंचित हो जाती है, जनता के अधिकारों पर सैन्य शासन हावी हो जाता है क्योंकि लोग अवैध कानून में पड़ जाते हैं जैसे, सीरिया, बर्मा, इंडोनेशिया, पाकिस्तान है।

चतुर्थ, अल्पस्तरीय राजनीतिक संस्कृति---------

इस प्रकार की राजनीतिक संस्कृति उन देशों में पाई जाती है जहां सरकार जनता के अधिकारों का हनन करती है, जहां जनता का शोषण किया जाता है। फ्रांसीसी क्रांति के पहले फ्रांस में यह संस्कृति देखने को मिलती थी, लेकिन आज फ्रांस में इस प्रकार की राजनीतिक संस्कृति देखने को नहीं मिलती।

इस प्रकार हम कर सकते हैं राजनीति का क्षेत्र सभी देशों में अलग-अलग है, जो कभी सफल नहीं हुई। प्रत्येक देश के नागरिक ऐसी राजनीतिक संस्कृति में आस्था रखते हैं,

जहांजनता का शोषण ना हो और वह वतं एवंसमान रहे। य क हर अपने वचार क अ भ सरकार केसम रखना चाहता है,लेकन पहलेयह देखा गया

है क और सारेदेश म तानाशाही सरकार केचलतेराजनी तक संकृ त क थ त ठ क नह थी, संकृ त एका धकारवाद म व ास करती थी, य क उ ही लोग का बोलबाला था, ले कन आज 21 व सद म राजनी तक संकृ त म जनता क भागीदारी बल हो गई है। यानी जनता राजनी तक संकृ त का सव सवा है,न क राज व था। पहलेक अव था म ऐसा देखा गया क राजनी तक संकृ त सरकार केहाथ म कठपुतली थी, सरकार जैसा चाहती थी राजनी तक संकृ त वैसा ही काम करती थी। जनता केहाथ म कुछ नह था, ले कन आज थ त बदल चुक हैऔर जन देश म जनता जाग क है,वहांराजनी तक संकृ त जनता केअनुसार ही काय करती है। यानी जनता क भलाई ही राजनी तक संकृ त का मे दंड है।

यह बात स य है येक देश कसी न कसी कार क राजनी तक संकृ त सेजुड़ा आ है।आज सभी देश म राजनी तक संकृ त केसाथ-साथ उ च राजनी तक संकृ तयांभी उभर रही है। अत: आमंड कोलमैन का कथन सही है क आज व म राजनी तक व था म राजनी तक संकृ त का वक सत प देखनेको मलता है।

आज भारत क राजनी तक संकृ त पर 1857 क ां त तथा आगामी वतं ता आंदोलन एवंभारत पाक वभाजन क घटना का भाव है। वैसे1689 म बील ऑफ राइट्स तथा 1965 केयु का टेन और अमे रका क राजनी तक संकृ त पर भाव पड़ा है। यही कारण है क इ तहास जड़ हैऔर राजनी तक उसका फल। इ तहास इस बात का सा ी है क भारत, चाइना तथा लंका क वाधीनता केसमय म कम अंतर होनेकेबाद इनक राजनी तक संकृ त अलग अलग है। आज राजनी तक वचारधाराएंभी राजनी तक संकृ त को नधा रत करती है। वक सत एवं वकासशील देश म राजनी तक संकृ त का नमाण अलग अलग सेहोता हैतथा उनके नमाण म बड़े-बड़ेनेता , वचारको का भाव देखनेको मलता है। जमनी म नाजीवाद, चीन म सा यवाद , अमे रका तथा टेन म उदारवाद इ या द वचारधारा का संबंध उस देश क राजनी तक संकृ त सेहै। राजनी तक संकृ त का लगाव उस देश क स यता, संकृ त, रा ीय वज, रा ीय योहार, रा भाषा तथा रा ीय मारक से संबंध रखता है।

जो देश धार्मिक है, वहांकि राष्ट्रीय संस्कृति धर्म से प्रभावित होती है। ऐसा देखा गया है कि वहांकि राजनीति धर्म से जुड़ी रहती है। धर्म ही राजनीतिक संस्कृति का निर्माण करती है। वेटिकन सिटी, नेपाल तथा इस्लामिक देश, कहा जाता है कि भारत में भी कुछ दल राजनीतिक संस्कृति से जुड़े रहते हैं और राजनीतिक संस्कृति को धर्म से जोड़ देते हैं ताकि शासन में भागीदारी आसानी से हो पायें। इस प्रकार सामान्य संस्कृति से अलग होकर राजनीतिक संस्कृति का वांछित विकास नहीं हो सकता। अतः निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि राजनीतिक संस्कृति के अनेक निर्धारक तत्व हैं जो राजनीतिक व्यवस्था की प्रकृति और स्वभाव का निर्धारण करते हैं। उनका यह विश्वास है कि राजनीतिक संस्कृति जैसी रहेगी, वैसा ही राजनीतिक विकास होगा।